



माताजी जन्मोत्सव

शिव प्रिये शिव प्रदे कैलाश प्रिय वल्लभे।
शिवेन्द्रादि स्तुते देवी शिवानी त्वां नमाम्यहम्॥
वन्दनीय माता जी

HAPPY BIRTHDAY MATA JI

प्रेम, करुणा, वात्सल्य और ममता को यदि कोई स्वरूप दिया जाये, तो वह मातृत्व शक्तिमयी वन्दनीय माता जी हैं। जो माता के रूप में जगदात्री, जगतजननी की ही प्रत्यक्ष अवतार हैं। भारतीय शास्त्रों में संसार में माँ को साक्षात् आद्या शक्ति का स्वरूप माना गया है। क्योंकि आद्या शक्ति गौरी से ही मातृत्व शक्ति का प्रादुर्भाव हुआ है। वन्दनीय माता जी तो साक्षात् भगवती गौरी के स्वरूप में शिव रूपी परमपूज्य सद्गुरुदेव के साथ अपने शिष्य पुत्रों पर वात्सल्यमय ममता की वर्षा करती रहती हैं। जो समरूप से सभी शिष्यों के लिये प्रवाहित होता रहता है।

हे करुणेश्वरी! आपका किस रूप में वर्णन करूँ, जिस मातृ शक्ति का वर्णन स्वयं त्रिदेव न कर सके, ऐसे वात्सल्यपूर्ण प्रेम के वर्णन की मुझमें सामर्थ्य कहाँ?

हे जगत् जननी! संसार की ज्वाला को अपने आंचल से ढककर अपने पुत्रों की हर स्वरूप में रक्षा करने वाली, ममता का पाठ पढ़ाकर सेवाभाव प्रफुल्लित कर देने वाली एकमात्र मातृत्व शक्ति आप ही में समाहित है। हे माँ! प्रकृति की आदि शक्ति को समेटे हुये जिस प्रकार आप सामान्य सी गृहिणी के स्वरूप को देखकर भ्रमित होना स्वाभाविक है, पर जो शिष्य निर्मल,

श्रेष्ठ भाव से अबोध शिशु की तरह आपके पास आते हैं, वे आपके गौरीमय स्वरूप का दर्शन कर धन्य हो जाते हैं, क्योंकि आपने इसी स्वरूप में अपने सम्पूर्ण जीवन को अपने प्राणप्रिय शिष्य, पुत्रों, अपने बेटों के जीवन निर्माण के लिये जीवन का अत्यधिक क्षण परम पूज्य सद्गुरुदेव के विरह में व्यतीत कर दिया। हम सभी शिष्यों के जीवन की सभी बाधाओं, दुःखों का समाधान हो सके इसके लिये आप हमेशा शक्ति स्वरूप में सद्गुरुदेव कैलाश जी की सहयोगी के रूप में सदैव उपस्थित रहें। सद्गुरुदेव जी के साहचर्य, प्रेम को त्याग कर सभी शिष्यों को उनके सानिध्य और साहचर्य प्राप्त करने का अवसर आपके करुणामय वात्सल्य का परिचय है।

हे सिद्धाश्रमवासिनी! आप सिद्धाश्रम के पावनतम पवित्र, निश्चल प्रेम, वहाँ के सुशोभित वातावरण को त्याग कर हम सभी शिष्य-शिष्याओं के कल्याण हेतु इस धरा पर अवतरित हुई, यह हम सभी का सौभाग्य है कि आपका स्नेह, प्रेम एक बार पुनः इस जीवन में प्राप्त हुआ और हम सबकी यह इच्छा है कि आप सदैव हम पर ऐसे ही वात्सल्यमय ममता की वर्षा करती रहें, जिससे हमारा जीवन आपके ममतामयी प्रकाश से हमेशा के लिये दैदीप्यमान हो सके।

माँ! आपका जन्मोत्सव हम सब शिष्यों के लिये पूर्ण रूप में ममत्व चेतना से सराबोर होने का दिवस है, यही वह दिवस है, जब हम आपके चरणों में बैठकर उद्भूत रूप से अमृत करुणा का रसपान कर सकेंगे।

हे माँ! हमारी यह अभिलाषा है कि आपके समक्ष बैठकर मातृत्व गरिमा से भरे मुखमण्डल से निर्झरित स्नेह से परिलुप्त होकर आत्मलीन हो जाऊँ। मैं तो अब स्वयं को तुम्हें ही सौंप देना चाहता हूँ, मुझे यह ज्ञात है कि मैं अत्यन्त ही दोष युक्त, असत्य, छल, कपट, प्रेम के मूल स्वरूप से अनभिज्ञ, आपके प्रेम के योग्य नहीं हूँ, मुझ में अनेक दोष हैं, लेकिन यदि आप ही मुझे ठुकरा दोगी, तो इस जग में तेरे लाल को कौन सम्भालेगा? वर्तमान के वातावरण में, कई जन्मों के पाप-दोष के कारण और श्रेष्ठ संस्कारों के अभाव, ईर्ष्या, द्वेष, असत्य, कपट से मेरा चित्त विदग्ध, दूषित हो गया है, लेकिन इसके बावजूद भी आपके प्रेम, स्नेह में कोई कमी नहीं है, मैं अब इन सब विकारों से विमुक्त होना चाहता हूँ। कब ऐसा होगा जब हम उस मनोदशा में पहुँच सकेंगे जो एक नवजात शिशु की होती है।

हे शक्ति स्वरूपा! आपके आडम्बर को देखकर मेरा मन कौतुक से भर जाता है, आपके अनेक रूप हैं, और आप प्रत्येक बार अलग ही रूप में दृश्यमान होती हैं, आपके माया से मैं भ्रमित हो जाता हूँ, होना भी स्वभाविक है, मुझमें इतना सामर्थ्य भी कहाँ है, कि माया के आवरण को भेद सकूँ। आपका वह रूप जब आप जीवन के अत्यन्त कठिन समय में परमपूज्य सद्गुरुदेव

के साथ शक्ति स्वरूप में विद्यमान थीं, चारों ओर बिखराव, भटकाव का दौर चल रहा था, उस समय आपके चहरे पर तनाव साफ झलक रहा था, आपके शिष्यों को इस प्रकार भ्रमित देखकर आपकी व्याकुलता दिन-प्रतिदिन बढ़ रही थी, आपकी भाव विह्वलता स्पष्ट रूप से प्रतीत हो रही थी। विधाता की इस अग्नि परीक्षा को आपने भली-भाँति पूर्ण किया। आपने इतने विकट प्रतिकूल परिस्थिति में संघर्ष और सहनशीलता की नयी उपमा दी। आपने परमपूज्य सद्गुरुदेव कैलाश जी के साथ गृहस्थ जीवन और सभी कर्तव्यों का पूर्णतः से निर्वाह करते हुये निरन्तर शिविर कार्यक्रम में सभी शिष्यों को अपनी सानिध्यता, प्रेम, करुणा, ममता का प्रसाद प्रदान किया। जिसके लिये आपको अनेक दुर्गम स्थानों की यात्रा भी करनी पड़ी और अथक परिश्रम द्वारा परमपूज्य सद्गुरुदेव के साथ प्रत्येक शिष्य को दृढ़ विचार, निश्चिन्ता का भाव दिया। साधना सफलता के लिये आपका मार्गदर्शन प्राप्त कर हम सिद्धियों के अत्यन्त निकट पहुँच गये हैं, यद्यपि आपके चरणों में बैठकर अब हमें साधना सिद्धि की इच्छा ना रही। अब हमारी यह याचना है कि जीवन के शेष दिन ममतामयी प्रेम को आत्मसात करते हुये आपकी सेवा और सानिध्यता में ही व्यतीत करूँ, आपके विशाल नेत्रों में जो अपार करुणा का सागर है, उसका अंश मात्र हमें भी प्रदान करो।

हे माँ! हम सब शिष्यों के जीवन की आप अमूल्य सम्पत्ति हो, माँ शब्द में ही अतुल आनन्द है। आप मातृत्व शक्ति की स्रोत हो, जो सदा अक्षुण्ण रूप में प्रवाहित होकर रहता है, वात्सल्य की आप अत्यन्त सागर हो, प्रेम की अनन्त भण्डार हो, आपका मातृ प्रेम तो निःस्वार्थ, प्रतिदिन की इच्छा से परे गंगा धारा से भी अधिक पवित्र है, हमारी जड़ता, स्वार्थ, विकार, कुसंस्कार, कुविचार, छल, कपट, पाप-दोष, से भी आप अपने वात्सल्यमय करुणा, दया, स्नेह, कर्तव्य पालन से विमुख नहीं होती हैं। सुख-दुःख, कष्ट-पीड़ा में भी आपके हृदय का स्रोत सदैव अक्षुण्ण रूप से प्रवाहित होता रहता है। अनन्य सेवा भाप पूर्ण वात्सल्य का अनन्त झरना आपके मातृ हृदय में ही है। अपने मानस पुत्र-पुत्रियों को वात्सल्यमय चेतना से ओत-प्रोत कर देने में ही आपको अनन्त संतोष, अटूट सुख मिलता है। माता रूप में आपने अनेक अत्यन्त पीड़ादायक कष्टों को सहन किया, कठिन से कठिन परिस्थिति में भी अडिग अविचल रूप में अपने शिष्यों के कल्याण के लिये सदैव तत्पर रहें हैं।

हे वन्दनीय माँ! यथा शक्ति आपके मातृत्व प्रेम को आपके जन्मदिवस पर व्यक्त करने का प्रयास किया है। हे माँ! आपको अर्पित करने के लिये मेरे पास सिर्फ श्रद्धा और भाव ही हैं, वो भी इस संसार जाल में पाप-दोषों से अशुद्ध हो गये हैं, फिर भी आखिर मैं भी आप ही के आँखों का तारा हूँ, मुझ अकिंचन के अपूर्ण भावों को स्वीकार करो जगत् जननी।